27/02/2021 राष्ट्रीय सहारा

कृषि आधारित लघु उद्योगों की टिप्स दीं

कानपुर। सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के प्रसार निदेशालय में महिला सशक्तिकरण को लेकर आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला शुक्रवार को हुयी। कार्यशाला में महिलाओं की समृद्धि व सशक्तिकरण के लिए कृषि आधारित लघु उद्योग-धंधों के साथ ही मौन पालन से संबंधित टिप्स डॉ.अरविंद कुमार सिंह व डॉ.आशा यादव ने दी।

दैनिक भास्कर

तंबाकू के पत्तों का विकास होने से उपज एवं पत्तों की गुणवत्ता बढ़ जाती है : डॉ. अरविंद

कानपुर। सीएसए के तंबाकू शोध केंद्र अरौल के प्रभारी अधिकारी डॉ अरविंद कुमार श्रीवास्तव ने तंबाकू उत्पादक किसानों को सलाह दी है। कि तंबाकू फसल की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए तंबाकू के पौधों का शीर्ष तोड़ना एवं शाखाओं का नियंत्रण दोनों ही महत्वपूर्ण क्रियाएं हैं। उन्होंने बताया कि इन क्रियाओं के करने से तंबाकू के पत्तों का विकास एवं वृद्धि अधिक होने से तंबाकू की उपज एवं पत्तों की गुणवत्ता बढ़ जाती है। डॉ. श्रीवास्तव ने कहा कि तंबाकू के पौधों के शीर्ष तोड़ने की क्रिया पौधरोपण के 50 से 60 दिन के उपरांत 10 से 11 पत्तों की दशा पर करनी चाहिए। उन्होंने बताया कि तंबाकू के पौधों में शाखाओं का नियंत्रण हाथों द्वारा तोड़ाई अथवा शाखा नियंत्रित रसायन जैसे डिकेनॉल अथवा रॉयलटेन का 4 से 5% घोल को शाखाएं निकलने के स्थान पर छिड़काव करने से शाखाएं नियंत्रित हो जाती हैं।

News Expert
10 hrs · Facebook for Android

तंबाकू उत्पादक गुणवत्ता के लिए किसानों को दी सलाह

कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के तंबाकू शोध केंद्र अरौल के प्रभारी अधिकारी डॉ अरविंद कुमार श्रीवास्तव ने तंबाकू उत्पादक किसानों को सलाह दी है। कि तंबाकू फसल की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए तंबाकू के पौधों का शीर्ष तोड़ना एवं शाखाओं का नियंत्रण दोनों ही महत्वपूर्ण क्रियाएं हैं। उन्होंने बताया कि इन क्रियाओं के करने से तंबाकू के पत्तों का विकास एवं वृद्धि अधिक होने से तंबाकू की उपज एवं पत्तों की गुणवत्ता बढ़ जाती है। डॉक्टर श्रीवास्तव ने कहा कि तंबाकू के पौधों के शीर्ष तोड़ने की क्रिया पौधरोपण के 50 से 60 दिन के उपरांत 10 से 11 पत्तों की दशा पर करनी चाहिए। उन्होंने बताया कि तंबाकू के पौधों में शाखाओं का नियंत्रण हाथों द्वारा तोड़ाई अथवा शाखा नियंत्रित रसायन जैसे डिकेनॉल अथवा रॉयलटेन का 4 से 5% घोल को शाखाएं निकलने के स्थान पर छिड़काव करने से शाखाएं नियंत्रित हो जाती हैं।इससे तंबाकू में शाखा नियंत्रित रसायनों का प्रयोग करने की अपेक्षा हाथ द्वारा यह क्रिया करने से लगभग 35 से 45 श्रमिक प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। डॉक्टर श्रीवास्तव ने कहा कि उत्तर प्रदेश में तंबाकू का क्षेत्रफल लगभग 24 हजार से 25 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल में तंबाकू उगाई जाती है। उन्होंने कहा इसकी खेती कानपुर,कन्नौज, फर्रुखाबाद, एटा,बहराइच,गोंडा,गोरखपुर आदि जनपदों में की जाती है। (डॉ खलील खान), मीडिया प्रभारी, चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर।

पत्तों का विकास एवं वृद्धि अधिक होने से तंबाकू की उपज एवं पत्तों की गुणवत्ता बढ़ जाती है: डॉ अरविंद कुमार श्रीवास्तव

RIO NEWS24   15 hours ago   कृषि, समाचार

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के तंबाकू शोध केंद्र अरौल के प्रभारी अधिकारी डॉ अरविंद कुमार श्रीवास्तव ने तंबाकू उत्पादक किसानों को सलाह दी है कि तंबाकू फसल की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए तंबाकू के पौधों का शीर्ष तोड़ना एवं शाखाओं का नियंत्रण दोनों ही महत्वपूर्ण क्रियाएं हैं। उन्होंने बताया कि इन क्रियाओं के करने से तंबाकू के पत्तों का विकास एवं वृद्धि अधिक होने से तंबाकू की उपज एवं पत्तों की गुणवत्ता बढ़ जाती है। डॉक्टर श्रीवास्तव ने कहा कि तंबाकू के पौधों के शीर्ष तोड़ने की क्रिया पौधरोपण के 50 से 60 दिन के उपरांत 10 से 11 पत्तों की दशा पर करनी चाहिए। उन्होंने बताया कि तंबाकू के पौधों में शाखाओं का नियंत्रण हाथों द्वारा तोड़ाई अथवा शाखा नियंत्रित रसायन जैसे डिकेनॉल अथवा रॉयलटेन का 4 से 5% घोल को शाखाएं निकलने के स्थान पर छिड़काव करने से शाखाएं नियंत्रित हो जाती हैं। इससे तंबाकू में शाखा नियंत्रित रसायनों का प्रयोग करने की अपेक्षा हाथ द्वारा यह क्रिया करने से लगभग 35 से 45 श्रमिक प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। डॉक्टर श्रीवास्तव ने कहा कि उत्तर प्रदेश में तंबाकू का क्षेत्रफल लगभग 24 हजार से 25 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल में तंबाकू उगाई जाती है। उन्होंने कहा इसकी खेती कानपुर, कन्नौज, फर्रुखाबाद, एटा, बहराइच, गोंडा, गोरखपुर आदि जनपदों में की जाती है।

kanpur.amarujala.com

कानपुर • शनिवार • 27.02.2021

अमर उजाला

तंबाकू उत्पादन बढ़ाने के बताए तरीके

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के तंबाकू शोध केंद्र अरौल के प्रभारी अधिकारी डॉ. अरविंद कुमार श्रीवास्तव ने शुक्रवार को तंबाकू उत्पादक किसानों को सलाह दी है। बताया कि तंबाकू फसल की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए पौधों का शीर्ष तोड़ना और शाखाओं का नियंत्रण दोनों जरूरी हैं। ऐसा करने से तंबाकू के पत्तों का विकास और उत्पादन बढ़ जाता है। बताया कि पौधों का शीर्ष 50 से 60 दिन में तोड़ना चाहिए। तंबाकू की खेती कानपुर, कन्नौज, फर्रुखाबाद, एटा, बहराइच, गोंडा, गोरखपुर आदि जनपदों में होती है। (संवाद)

तंबाकू की शाखाओं के नियंत्रण में दवाएं उपयोगी

शोध केंद्र की तंबाकू के पौधों की शाखाओं को हाथ से न तोड़े जाने की सलाह

कानपुर (एसएनबी)। सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि से संबद्ध तंबाकू शोध केन्द्र ने तंबाकू किसानों को तंबाकू की शाखाओं को नियंत्रित करने के लिए दवाओं का उपयोग करने की सलाह दी है। तंबाकू में शाखा नियंत्रित रसायनों का प्रयोग करने से श्रमिकों की बचत हो सकती है। रसायनों की अपेक्षा हाथ द्वारा तंबाकू शाखाओं को तोड़े जाने की क्रिया में लगभग 35 से 45 श्रमिक प्रति हेक्टेयर खेतों में लगाने पड़ते हैं। विवि के तंबाकू शोध केन्द्र अरौल के प्रभारी डॉ. अरविंद कुमार श्रीवास्तव ने कहा है कि तंबाकू फसल की गुणवत्ता को बनाये रखने के लिए तंबाकू के पौधों का शीर्ष तोड़ना व शाखाओं का नियंत्रण दोनों ही महत्वपूर्ण क्रियाएं हैं। इन क्रियाओं को करने से तंबाकू के पत्तों का विकास एवं वृद्धि अधिक होने से उपज व पत्तों की गुणवत्ता बढ़ जाती है। डॉ. श्रीवास्तव ने कहा कि तंबाकू के पौधों के शीर्ष तोड़ने की क्रिया पौधरोपण से 50 से 60 दिन के उपरांत 10 से 11 पत्तों की दशा पर करनी चाहिए। उन्होंने बताया कि तंबाकू के पौधों में शाखाओं के नियंत्रण के लिए हाथों द्वारा तोड़ाई अथवा शाखा नियंत्रित रसायन का प्रयोग किया जाता है। डिकेनॉल अथवा रॉयलटेन रसायन के चार से पांच प्रतिशत घोल को शाखाएं निकलने के स्थान पर छिड़काव करने से शाखाएं नियंत्रित हो जाती हैं। उनके मुताबिक प्रदेश में तंबाकू की खेती लगभग 24-25 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जाती है। इसकी खेती कानपुर, कन्नौज, फर्रुखाबाद, एटा, बहराइच, गौंडा, गोरखपुर आदि जिलों में की जाती है।

सीएसए में खड़ी तम्बाकू की फसल। फोटो : एसएनबी

आज
कानपुर
27 फरवरी, 2021 5

तंबाकू के पौधे का शीर्ष तोड़ना एवं शाखाओं का नियंत्रण महत्वपूर्ण

वैज्ञानिक डा. अरविंद कुमार ने दी किसानों को सलाह

कानपुर, 26 फरवरी। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के तंबाकू शोध केंद्र अरौल के प्रभारी अधिकारी डॉ अरविंद कुमार श्रीवास्तव ने तंबाकू उत्पादक किसानों को सलाह दी है, कि तंबाकू फसल की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए तंबाकू के पौधों का शीर्ष तोड़ना एवं शाखाओं का नियंत्रण दोनों ही महत्वपूर्ण क्रियाएं हैं। वैज्ञानिक ने बताया कि इन क्रियाओं के करने से तंबाकू के पत्तों का विकास एवं वृद्धि अधिक होने से तंबाकू की उपज एवं पत्तों की गुणवत्ता बढ़ जाती है। डॉ. श्रीवास्तव ने कहा कि तंबाकू के पौधों के शीर्ष तोड़ने की क्रिया पौधरोपण के 50 से 60 दिन के उपरांत 10 से 11 पत्तों की दशा पर करनी चाहिए। उन्होंने बताया कि तंबाकू के पौधों में शाखाओं का नियंत्रण हाथों द्वारा तोड़ाई अथवा शाखा नियंत्रित रसायन जैसे डिकेनॉल अथवा रॉयलटेन का 4 से 5 प्रथिशत घोल को शाखाएं निकलने के स्थान पर छिड़काव करने से शाखाएं नियंत्रित हो जाती हैं। इससे तंबाकू में शाखा नियंत्रित रसायनों का प्रयोग करने की अपेक्षा हाथ द्वारा यह क्रिया करने से लगभग 35 से 45 श्रमिक प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। डॉ श्रीवास्तव ने कहा कि उत्तर प्रदेश में तंबाकू का क्षेत्रफल लगभग 24 हजार से 25 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल में तंबाकू उगाई जाती है। उन्होंने कहा इसकी खेती कानपुर, कन्नौज, फर्रुखाबाद, एटा, बहराइच, गोंडा, गोरखपुर आदि जनपदों में की जाती है।

शाश्वत टाइम्स

हिन्दी दैनिक

वर्ष : 5, अंक : 333 पृष्ठ : 12
कानपुर महानगर, शनिवार
27 फरवरी, 2021
मूल्य ₹ 2.00

www.shashwattimes.com

यूपी में माफियाओं की अब खैर नहीं, सीएम योगी ने दिया यह सख्त आदेश...6

विश्व इतिहास

1921 विएना में इंटरनेशनल वर्किंग यूनियन ऑफ सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना हुई।

1982 अबुल फ़ज़ल मोहम्मद अहसानुद्दीन चौधरी बांग्...

सीएसए में तंबाकू उत्पादक किसानों को सलाह

शाश्वत टाइम्स कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के तंबाकू शोध केंद्र अरौल के प्रभारी अधिकारी डॉ अरविंद कुमार श्रीवास्तव ने तंबाकू उत्पादक किसानों को सलाह दी है कि तंबाकू फसल की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए तंबाकू के पौधों का शीर्ष तोड़ना एवं शाखाओं का नियंत्रण दोनों ही महत्वपूर्ण क्रियाएं हैं। उन्होंने बताया कि इन क्रियाओं के करने से तंबाकू के पत्तों का विकास एवं वृद्धि अधिक होने से तंबाकू की उपज एवं पत्तों की गुणवत्ता बढ़ जाती है। डॉक्टर श्रीवास्तव ने कहा कि तंबाकू के पौधों के शीर्ष तोड़ने की क्रिया पौधरोपण के 50 से 60 दिन के उपरांत 10 से 11 पत्तों की दशा पर करनी चाहिए। उन्होंने बताया कि तंबाकू के पौधों में शाखाओं का नियंत्रण हाथों द्वारा तोड़ाई अथवा शाखा नियंत्रित रसायन जैसे डिकेनॉल अथवा रॉयलटेन का 4 से 5% घोल को शाखाएं निकलने के स्थान पर छिड़काव करने से शाखाएं नियंत्रित हो जाती हैं।इससे तंबाकू में शाखा नियंत्रित रसायनों का प्रयोग करने की अपेक्षा हाथ द्वारा यह क्रिया करने से लगभग 35 से 45 श्रमिक प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। डॉक्टर श्रीवास्तव ने कहा कि उत्तर प्रदेश में तंबाकू का क्षेत्रफल लगभग 24 हजार से 25 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल में तंबाकू उगाई जाती है। उन्होंने कहा इसकी खेती कानपुर,कन्नौज, फर्रुखाबाद, एटा,बहराइच,गोंडा,गोरखपुर आदि जनपदों में की जाती है।

सीएसए में पीएचडी और अन्य कोर्स हो रहे अपग्रेड

जासं, कानपुर : सीएसए के छात्रों को प्रतियोगी परीक्षाओं, शोध कार्यों और विभिन्न तरह के सेमिनारों में बेहतर प्रदर्शन करने में सक्षम बनाने के लिए कोर्स को अपग्रेड किया जा रहा है। 15 विषयों में आंशिक फेरबदल हो चुके हैं, जिसे नई किताबों के रूप में जल्द ही प्रकाशित किया जाएगा।

उच्चीकरण भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आइसीएआर) की गाइडलाइन के आधार पर किया जा रहा है। इसका डिजिटल संस्करण विवि की वेबसाइट पर अपलोड होगा, जिसे इंटरनेट के माध्यम से कोई भी कहीं से देख सकेगा। भविष्य में इसके आधार कई शार्ट टर्म कोर्स संचालित करने के प्लानिंग है। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि में 13 विभाग हैं, जिसके अंतर्गत बीएससी, एमएससी, पीएचडी के कोर्स संचालित किए जाते हैं। निदेशक शोध डॉ. एचजी प्रकाश ने बताया कि आइसीएआर में डीन कमेटी की बैठक हुई थी, जिन्होंने कई कोर्स में बदलाव की रूपरेखा तैयार की है। इस व्यवस्था से देश भर में कृषि की पढ़ाई और कोर्स में एकरूपता आ जाएगी।

आज
कानपुर 27 फरवरी 2021

महानगर सार

प्रतिभागियों को बांटे गये प्रमाण पत्र

प्रतिभागी को प्रमाण पत्र देते मुख्य अतिथि।

कानपुर। सीएसए की ओर से आयोजित पांच दिवसीय महिला सशक्तिकरण प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह में मुख्य अतिथि डा. आर.पी. सिंह ने महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने वाले बिन्दुओं पर विस्तार से चर्चा की । साथ ही महिलाओं को स्वावलंबी बने के साथ उनके सामाजिक सशक्तिकरण पर जोर दिया। सीएसए के प्रसार निदेशालय से समन्वयक डा. अरविंद कुमार सिंह ने प्र शिक्षण के साथ तकनीकी सत्रों में बराबर महिलाओं को जागरुक करने हेतु दिशा-निर्देश दिये। डा. आशा यादव ने पांच दिवसीय महिला सशक्तिकरण प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वयन कर महिलाओं को कृषि आधारित लघु उद्योग-धंधो के साथ अन्य जानकारियां दी। डा. मिथलेश वर्मा ने महिलाओं के लिए सरकार द्वारा चलायी जाने वाली योजनाओं पर विस्तार से जानकारी दी एवं उनका लाभ उठाने के लिए महिलाओ को जागरुक किया। सह निदेशक प्रसार डा. सुभाष चंद्रा ने महिला सशक्तिकरण के महत्व पर प्रकाशडाला। सभी को प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया। इस दौरान डा. पी.के. राठी, डा. एस.बी. पाल, डा. पुष्पा देवी, डा. अनिल कुमार, श्रीमती मृणालिनी चौहान आदि मौजूद रही।